दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL6**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): ANIL KUMAR YADAV

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date). 7 / 17/7/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: – 9 7 6 4 6 –

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

उत्तम

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 142 टिप्पणी (Remarks):

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली–9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

A4

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) "सतगुरु लई कमाँण करि बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ भीतरि रह्या सरीर।।"

संदर्भ एवं प्रसंग:- प्रस्तुत काव्यांश डॉ श्यामसुन्दर दास द्वारा संपादित पुस्तक 'कबीर ग्रन्थावली' के 'गुरु को अंग' शीर्षक से ली गयी है। इसमें कबीरदास जी गुरु की महिमा और उनके प्रभाव के महत्त्व को रेखांकित करते हैं।

शीर्षक

व्याख्या:- कबीरदास जी गुरु को बहुत महत्त्व देते हैं क्योंकि गुरु ही उन्हें सत्य अर्थात ब्रह्म का ज्ञान कराता है। कबीरदास जी कहते हैं कि गुरु की वाणी धनुष और तीर के समान है जो उनको अन्दर तक प्रेम के बन्धन से भेद देती है।

प्रेम का तीर उनको अज्ञानता से निकालकर सच्चाई पर ला देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत सौन्दर्य:-

(i) गुरु की महत्ता को रेखांकित किया है। तथा भारतीय परम्परा में गुरु की महत्ता को स्थापित किया।

(ii) जायसी भी "गुरु सुआ जेहि पंथ दिखावा" कहकर गुरु को बड़ी महत्व देते है।

(iii) गुरु को अज्ञानता को दूर करने तथा ब्रह्म अर्थात सत्य ज्ञान की प्राप्ति का माध्यम बताया है।

शिल्पगत सौन्दर्य:-

① मुक्तक रूप से 'दोहा छन्द' का प्रयोग — अच्छा

② भाषा 'सधुक्कड़ी' पंचमेल- "तीर"

③ बिम्बात्मक शैली।

④ प्रतीक रूप से - 'कमान' और 'तीर'

⑤ उपमा अलंकार 'ज्यु' 'ज्यों'

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।
जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सबै झुठो जतननि को करिबो।।

सन्दर्भ-प्रसंग:- प्रस्तुत पद्यांश आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा सम्पादित 'सूर ग्रन्थावली' से उद्धृत ली गयी है। इसमें सूरदास द्वारा 'भ्रमरगीत' के माध्यम से कृष्ण के वियोग की दशा का वर्णन है।

व्याख्या:- सूरदास कहते हैं कि राधा तथा गोपियाँ कह रही हैं कि कृष्ण के मथुरा चले जाने पर उन्हें कुछ भी ठीक नहीं लग रहा है। 'कमलनयन' कृष्ण जब से बिछुड़े हैं तब से इनकी आँखों से लगातार आँसू बह रहे हैं। चन्दन की शीतलता भी आग लगा रही है। गोपियाँ कहती हैं कि उन्होंने सभी प्रकार के प्रयास कर लिये, लेकिन उन्हें कृष्ण के ध्यान मुक्ति नहीं मिली।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत विशेषता :-

(i) कृष्ण का बिछड़ना ऐसा है जैसे आत्मा का जीव से अलगाव हो गया है। कृष्ण आत्मा तथा गोपियाँ जीव की प्रतीक है।

(ii) जायसी के 'नागमती वियोग' से तुलना की जा सकती है। वियोग शृंगार यहाँ बिहारी की तरह जरा भी ऊहात्मक नहीं है।

(iii) भक्तिकाल के चारों कवियों में यहाँ वियोग की सघनता अत्यन्त घनीभूत है।

शिल्पगत विशेषता :-

(i) ब्रजभाषा की कोमलता और लयात्मकता द्रष्टव्य है।
(ii) पद शैली की रचना है।
(iii) उपमा अलंकार का प्रयोग "सम"
(iv) कमलनयन' मे रूपक अलंकार है।
(v) दृश्य बिम्ब का सघन प्रयोग।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) जाने दो वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है

सन्दर्भ एवं प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक युग के प्रगतिशील कवि नागार्जुन के 'बादल को घिरते देखा है" कविता से ली गयी हैं। नागार्जुन यहाँ पर हिमालय के वर्णन को कवि कल्पना की बजाय यथार्थवादी दृष्टि से देखते हैं।

व्याख्या :-

कवि कहता है कि ~~के~~ जो केवल कल्पना है वह उनको अपने विचार के योग्य प्रतीत नहीं होती है। इसलिये वह कल्पना में भी जीवन के यथार्थ को नहीं छोड़ता है। भीषण जाड़ा तथा बादलों की गरजों चमकों को भी वह देखा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत विशेषता:-

(i) नागार्जुन की प्रगतिवादी कविता के तेवर के विपरीत यह कविता प्रकृति की सुन्दरता का वर्णन करती है। नागार्जुन इसलिए विद्रोही है कि मार्क्सवाद में भी सौन्दर्य को स्वीकार करते हैं।

(ii) नागार्जुन, केवल कल्पना का निषेध करते हुए इसे यथार्थ से जोड़ते हैं। अपनी प्रगतिवादी चेतना को स्पष्ट करते हैं।

(iii) अपने स्वभाव के अनुकूल जाड़ों और बरसात को चुनते हैं क्योंकि स्वभाव को वे समग्रता में देखते हैं

(iv) प्रतीक रूप से बर्फ निचोड़ "गरज-गरज" कोड़ते में देखा जा सकता है।

शिल्पगत विशेषता:-

(i) भाषा तत्सम प्रधान - 'कल्पित'

(ii) बिम्ब - स्पर्श, दृश्य, श्रव्य सभी

(iii) प्रतीकात्मक भाषा - बर्फ निचोड़

(v) 'गगन-चुम्बी' रूपक का प्रयोग।

अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) मुझे स्मरण है:
और चित्र प्रत्येक
स्तब्ध, विजड़ित करता है मुझ को।
सुनता हूँ मैं
पर हर स्वर-कम्पन लेता है मुझ को मुझ से सोख-
वायु-सा नाद-भरा मैं उड़ जाता हूँ।...

सन्दर्भ एवं प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रयोगवाद के महान कवि अज्ञेय की लम्बी कविता "असाध्य वीणा" से ली गयी है।
प्रस्तुत पंक्ति में प्रियंवद द्वारा वीणा को आत्मा के स्तर पर साधने का प्रयास है।

व्याख्या:- प्रियंवद कहता है कि उसे स्मरण है किस प्रकार संगीत तक अनेक ध्वनियाँ समाई हुई है। और प्रत्येक ध्वनि तथा कम्पन उसमें, उसको 'अहंम' को निकाल देता है।
उसका अहं वायु के बुलबुले सा फट जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्यगत सौन्दर्य -

(i) अज्ञेय पर प्रतीक का 'परम्परा सिद्धान्त' का प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

(ii) प्रियवंद परम्परा में ही अपने महत्त्व को देखता है। और पाता है कि हम पूरी परम्परा पर आत्यन्त छोटे हैं।

(iii) सर्जन की सार्थकता के लिए अहम का विसर्जन अनिवार्य है।

(iv) निर्वैयक्तिकता सिद्धान्त तथा 'जेन बुद्धिज्म' का प्रभाव भी दिख रहा है।

(v) भाषा तत्समी परन्तु तद्भव शब्द भी - "खोल"

(vi) बिम्बात्मकता - ध्वनि बिम्ब 'वाद्यनाद'

(v) अनुप्रास योजना - "स्वर-कम्पन" "बाह्यना नाद-भरा"

अच्छा

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पिस गया वह भीतरी
औ' बाहरी दो कठिन पाटों बीच,
ऐसी ट्रैजेडी है नीच!!
बावड़ी में वह स्वयं
पागल प्रतीकों में निरंतर कह रहा
वह कोठरी में किस तरह
अपना गणित करता रहा
औ' मर गया...

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिवादी कवि मुक्तिबोध की लम्बी विचार प्रधान कविता 'ब्रह्मराक्षस' से ली गयी है।

कवि ब्रह्मराक्षस के अन्तर्विरोधों के परिणाम को दिखा रहा है।

व्याख्या :- 'आत्मचेतस' और विश्वचेतस मन के दो पाटों के बीच उसकी जिन्दगी खत्म हो गयी। वह केवल बावड़ी में बैठकर अपना 'गणित' करता रहा। उसको ज्ञान तो बहुत था परन्तु, उसको उपयोग करने की व्यवहारिकता को नहीं समझ पाया इसलिए मारा गया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :-

(i) आत्मचेतस व विश्वचेतस की भावना का संघर्ष उसकी तेजड़ी में बदल जाता है।

(ii) ज्ञानात्मक संवेदना के महत्व को रेखांकित करते हैं।

(iii) मध्यवर्गीय बौद्धिक वर्ग पर चोट करते हैं कि ज्ञान अपने आप में सम्पूर्ण नहीं। उसका व्यावहारिक उपयोग भी जरूरी।

(iv) मार्क्सवाद और मनोविश्लेषण का संयुक्त प्रभाव।

(v) भाषा अत्यन्त प्रतीकात्मक।

(vi) शब्दों में तत्सम व अंग्रेजी भी - ट्रेजेडी'

(vii) अद्वैत की आध्यात्मिक व प्रमाद की आनन्दवादी व्याख्या के विपरीत 'सत-चित-वेदना' की स्थापना

(viii) 'ब्रह्मराक्षस' प्रतीक रूप में शहरी बौद्धिक मध्यवर्ग के साथ मुक्तिबोध स्वयं ही -

अच्छा

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) 'असाध्यवीणा' 'सृजन तत्त्व' की गहन व्याख्या करने वाली कविता है- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में इस कविता पर विचार कीजिए। 20

'असाध्य वीणा' जो साधना है, सृजन की पूरी प्रक्रिया तथा सृजन तत्व की सम्पूर्ण व्याख्या को अपने समेट लिया है। कविता का शीर्षक मानो सृजन को आमंत्रित कर रहा है। एक तरफ यह कविता अज्ञेय सम्पूर्ण कविता कर्म का प्रतिनिधित्व करती है तो दूसरी तरफ अज्ञेय के जीवन दर्शन को भी उद्घाटित करती है। सृजन तत्व की यही व्याख्या कविता में 'असाध्य वीणा' बनकर आयी है जिसे प्रियंवद और अज्ञेय दोनों साधने का प्रयास करते हैं।

कविता में 'सृजन तत्व' के अन्तर्गत चारों चीजों पर चर्चा की गयी है - सृजन सर्जक, सृजन प्रक्रिया, सृजन का स्वरूप व सृजन का प्रभाव।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी कविता में क्रमबद्ध रूप से इन्हीं चारों तत्वों पर विचार किया गया है

कविता के प्रारम्भ में ही सृजन की अर्हता पर विचार किया गया है - "हार गये सब गुनी गुनी कलावन्त", परन्तु वीणा मौन रही क्योंकि सबके अन्दर अहम था। यही अहम का विसर्जन ही कविता या सृजन की अर्हता है। "केशकम्बली, गुफा गेह" ने वीणा को सौंप दिया था। अपना सबकुछ।

कविता अर्थात सृजन तत्व का द्वितीय तत्व है - सृजन का स्वरूप इसमें प्रियंवद कीर्ति तरु में व्याप्त सभी ध्वनियों को याद करता है। यह अज्ञेय का परम्परा सिद्धान्त है। जिसमें उनपर इलियट का प्रभाव है। परम्परा में प्रियंवद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपना प्रभाव देखता है। विशिष्ट तह में असंख्य ध्वनियाँ है। इसी पश्चात कविता में भी आती है।

इसके बाद की प्रक्रिया में आत्मा के स्तर पर वीणा से तादात्म्य स्थापित करना होता है। सृजन तभी होगा जब हम अपने भावनात्मक स्तर पर एकात्म स्थापित कर लें। रचने वाले मन और रचना में एक-रूपता आ जाये। प्रियंवद कन्हैया स्पर्श से वीणा को छूता है।

सृजन का प्रभाव "अवति इसा संगीत स्वयंभू" के द्वारा होता है। वीणा के बजने के उपरांत संगीत प्रभाव सभी व्यक्तियों को उनके स्वभाव व व्यक्तित्व के अनुसार होता है किसी को चमत्कार, तो किसी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को जानकर सुखदाई होती है।
इस प्रकार 'आनाध्यजीवा' 'सृजन तत्व' की व्याख्या आध्यात्मिक ढंग से करते हुए भी उसके सम्पूर्ण प्रभाव को व्यक्त करने में कामयाब रही है इलियट का परम्परा तथा निर्वैयक्तिकता सिद्धान्त के प्रभाव के साथ और कॉलरिज का भी प्रभाव दिखाई देता है

अच्छा

11/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष' ब्रह्मराक्षस कविता का केन्द्रीय स्वर है।" विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद के 'सत-चित-आनन्द' दर्शन के विपरीत मुक्तिबोध 'सत-चित-वेदना' के कवि है। और यह वेदना 'ब्रह्मराक्षस' के 'ट्रैजिक' अन्त पर आकर समाप्त होती है। इस वेदना और ट्रैजडी का मूल कारण मुक्तिबोध की कविता का आत्म संघर्ष है। यह आत्मसंघर्ष जितना मुक्तिबोध का है उतना ही ब्रह्मराक्षस का है। उतना ही मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का भी है। और आज भी 'ब्रह्मराक्षस' की केन्द्रीय विशेषता है।

मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी पूंजीवादी व्यवस्था की उपज है परन्तु उसके संस्कार आज भी प्राचीन भारतीय वाले 'वसुधैव कुटुम्बकम' का है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नगरीकरण के कारण वह अपने
गाँव व लोगों से कट भी गया
है उसमें विरोध लेने की क्षमता
की कमी है। वह असफल होने
डरता है। यही मध्यवर्ग मुक्तिबोध
का प्रधान रहस्य है। यह मध्यवर्ग
पढ़ा-लिखा है यह गाँधी, मार्क्स,
वेद पुराण सब जानता है लेकिन
उसे केवल ज्ञान के स्तर तक ही
रखता है। वह अकेले बैठकर
गणित करता है।

" वह कोठरी में किस तरह
अपना गणित करता रहा
और मर गया,"

लेकिन उनका एक नैतिक
मन है। जो बार-बार उभर आने
के लिए तड़पता है। मध्यवर्ग
का संघर्ष इसी 'आत्मचेतस'
और 'विश्वचेतस' नामक कवि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पाटों के बीच पीस रहा है।
"पिस गया वह भीतरी
औ बाहरी दो कठिन पाटों
के बीच,
ऐसी ट्रेजेडी है नीच॥"

मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी में संघर्ष इसलिए है कि वह अपने व्यक्तित्व को समाप्त करके पूरी तरह से विश्व चेतन बनना चाहता है और कर्म, ज्ञान और इच्छा में एकात्मकता चाहता चाहिए जो कि सम्भव नहीं है। कोई व्यक्ति इसे पूरी तरह प्राप्त नहीं कर सकता है।

इसी ज्ञान, कर्म व इच्छा के द्वंद्व में ब्रह्मराक्षस या मध्यवर्ग का अन्त हो जाता है। अपने आत्म संघर्ष से वह निकल नहीं पाता है।

बहुत अच्छा

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) "'बादल को घिरते देखा है' कविता नागार्जुन के शिल्प कौशल का अप्रतिम उदाहरण है।" विवेचन कीजिए। 15

नागार्जुन प्रगतिवादी धारा के सबसे बड़े कवि है। प्रगतिवादी लोग कथ्य को महत्व देते हुए रूप (form) को एक उपउत्पाद से ज्यादा महत्व नहीं देते है। 'बादल को घिरते देखा है" कविता नागार्जुन की ऐसी कविता है जो शिल्प और सौन्दर्य के स्तर पर किसी अन्य काव्यान्दोलन से कम नहीं है। इसलिए इसके शिल्प के महत्व का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

नागार्जुन की अनेक कविताएं अपने शिल्प के कारण नहीं बल्कि अपने ~~अ...~~ तेवर, भाव व व्यंग्य के कारण याद की जाती है परन्तु 'बादल को घिरते देखा है' कविता पर कुछ प्रगतिवादी आलोचक सवाल भी उठाते हैं, यहाँ भाव

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की सुन्दरता है तो ग्रोलय की नवीनता भी है
नागार्जुन की यह कविता एक लम्बी कविता है। यह प्रबन्ध काव्य की कविता तो नहीं है लेकिन भावों और सौन्दर्य बोध के स्तर पर एक प्रबन्धात्मक स्वरूप देखी जा सकती है।

कविता में शब्दावली अत्यन्त ही तत्समी है। लेकिन प्रवाह में बाधक नहीं है। इसमें तद्भव तथा उर्दू शब्दों का भी प्रयोग दिखता है।

कविता बिम्ब के स्तर पर नागार्जुन के यथार्थवादी बिम्ब के स्तर को पार कर जाती है। छायावादी कवि निराला तथा पन्त से प्रतिस्पर्धा करती नजर आती है।

" अभ्र-चुम्बी कैलाश शिखर पर
महामेघ को झन्झानिल से
गरज - गरज भिड़ते देखा है.
बादल को घिरते देखा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संश्लिष्ट बिम्बों का प्रयोग किया है श्रव्य, दृश्य, गत्यात्मक सभी बिम्ब दिखाई देते है।
कविता में प्रतीकात्मकता की भी छौंक की गयी है।
अप्रस्तुत योजना में उपमा और रूपक का सटीक प्रयोग हुआ है।
इस प्रकार यह कविता न केवल नागार्जुन बल्कि पूरे प्रगतिवादी कविता के शिल्प के स्तर पर चुनौती पेश करती है।

अच्छा प्रयास 7½

15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'B'

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है।

2

प्रस्तुत गद्यांश जयशंकर प्रसाद कृत 'स्कन्दगुप्त' से लिया गया है। प्रस्तुत गद्यांश में प्रसाद समय के महत्त्व और अनेक प्रतिपादित कर रहे हैं।

व्याख्या :-

① प्रसाद कहते हैं कि जीवन की दशा किसी 'स्थिति' में नहीं है। यह तो सदैव 'प्रवाह' में रहती है। जीवन ठहराव नहीं होता है। वह समय की गति के बीच से सृजन होता है। अच्छा-बुरा, सब इसी का परिणाम है। प्रसाद के अनुसार इस गति के कारण ही सृष्टि और प्रकृति का निर्माण होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौन्दर्य :-

(i) जीवन और समय के अन्तर्सम्बन्ध को सूक्ति रूप में बताया है।

(ii) समय के प्रवाह में ही जीवन की विभिन्न स्थितियों को उभारने का प्रयास किया है। यह दर्शन भारतीय परम्परा के अनुकूल है।

(iii) 'दिव्या' का मारिश तथा 'आषाढ़ का एक दिन' का कालिदास भी परिवर्तन और समय को ही सत्य मानते हैं।

(iv) भाषा तत्सम संस्कृतनिष्ठ।

(v) सूक्ति शैली का प्रयोग

(vi) भाषा में प्रवाह अत्यन्त प्रभावी है

(vii) गत्यात्मक बिम्ब खींचने का प्रयास।

1/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भावसत्ता नहीं रह जाती, उसका हृदय विश्व-हृदय हो जाता है।

सन्दर्भ एवं प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी निबन्धधारा के आदृत आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के 'कविता क्या है' निबन्ध से ली गयी हैं। शुक्ल जी इसमें कविता के प्रयोजन या महत्त्व को बतला रहे हैं।

व्याख्या:- यहाँ शुक्ल जी कविता को मनुष्यत्व की उच्च भूमि प्रदान करने का साधन बताते हैं। तथा कविता को 'लोक मंगल' की साधना अवस्था से जोड़ने का प्रयास करते हैं। कविता व्यक्ति को उसके मूल भावना से जोड़कर उसे विश्व से जोड़ देती है इस प्रकार कविता मनुष्य को आत्मनिष्ठ से विश्वचेतन बना देती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौन्दर्य :-

(I) कविता को लोक मंगल की साधनावस्था से जोड़ते हैं।

(II) कविता के सामाजिक प्रभाव व उद्देश्य को रेखांकित करते हैं।

(III) कविता को मनुष्य की मूल दशा से जोड़ने का माध्यम बताते हैं।

(IV) कविता 'प्रछन्नताओं के परदों" को हटाने का कार्य करती है।

(V) कविता मनुष्य को आत्मचेतन से ऊपर विश्वचेतना के धरातल पर ले जाती है।

(VI) विचारात्मक निबंध में निगमनात्मक शैली का प्रयोग।

(VII) भाषा - तत्समी प्रभाव

(VIII) भाषा स्पष्ट, सरल व प्रवाहपूर्ण

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) कर्त्ता से बढ़कर कर्म का स्मारक दूसरा नहीं। कर्म की क्षमता प्राप्त करने के लिये बार-बार कर्त्ता ही की ओर आँख उठती है। कर्मों से कर्त्ता की स्थिति को जो मनोहरता प्राप्त हो जाती है उस पर मुग्ध होकर बहुत से प्राणी उन कर्मों की ओर प्रेरित होते हैं। कर्त्ता अपने सत्कर्म द्वारा एक विस्तृत क्षेत्र में मनुष्य की सद्वृत्तियों के आकर्षण का एक शक्ति केन्द्र हो जाता है।

सन्दर्भ एवं प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ मूर्धन्य निबंधकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के "श्रद्धा-भक्ति" निबन्ध से ली गयी है।

प्रस्तुत पंक्ति में श्रद्धा क्यों उत्पन्न होती है उन कारणों की पहचान की जा रही है।

व्याख्या :- शुक्ल जी के अनुसार जिसके प्रति श्रद्धा होती है, वह कई लोगों अपने कर्म से प्रेरित करता है। उसके कर्मों के प्रति भी लोगों एक श्रद्धा का भाव जगाता है। जिसमें उसके साथ-साथ लोक कल्याण भी होता है। इस प्रकार कर्ता अपने कर्म से मनुष्य को उनकी सद्वृतियों से जोड़ देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष:-

(i) कर्ता और कर्म के बीच के घनिष्ट सम्बन्ध को उद्घाटित किया है।

(ii) श्रद्धा की सामाजिक उपयोगिता को रेखांकित किया क्योंकि अन्य व्यक्तियों को भी सत्कर्मों की ओर प्रेरित करती है।

(iv) 'लोक मंगल की साधना' श्रद्धा में भी दिखाई पड़ती है।

(v) भाषा प्रांजल एवं प्रवाहमयी है।

(vi) भाषा में तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।

(v) गवेषणात्मक वैचारिक निबन्ध में भी स्पष्ट व सरल भाषा है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भारत समग्र विश्व का है, और सम्पूर्ण वसुन्धरा इसके प्रेम-पाश में आबद्ध है। अनादि काल से ज्ञान की, मानवता की ज्योति यह विकीर्ण कर रहा है। वसुन्धरा का हृदय—भारत—किस मूर्ख को प्यारा नहीं है?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ:- प्रस्तुत निबन्ध बाबू गुलाब राय के 'भारतीय संस्कृति' निबन्ध से ली गयी है।

प्रसंग एवं व्याख्या:- प्रस्तुत गद्यांश में भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का महत्त्व बताते हुए, गुलाब राय जी कह रहे हैं कि भारत हमेशा से विश्व गुरु है। यह सम्पूर्ण धरती को अपने प्रेम व भाईचारा के आगोश में बंधता आया है और आदिकाल से भारत ज्ञान व मानवता का पाठ विश्व को पढ़ाता आया है इसलिए यह सभी लोगों को प्यारा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष:

(i) भारत की प्राचीन महानता को व्यक्त किया गया है।

(ii) भारत के 'वसुधैव कुटुम्बकम' की धारणा को सम्पूर्ण विश्व स्वीकारता है।

(iii) इतिहास के प्रति 'मोहतात्मक' भाव देखा जा सकता है।

(iv) भारतीय संस्कृति में ज्ञान, मानवता, प्रेम जैसे मूल्यों की सटीक पहचान की गयी।

(v) भाषा में तत्सम शब्दावली।

(vi) शैली – भावात्मक, आत्मपरक।

(vii) रूपक व उपमा अलंकार द्रष्टव्य है।

4/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) सामन्ती बन्धनों के खत्म होने पर सौन्दर्य और प्रेम की भावनाएँ अपने सहज रूप में पल्लवित होंगी और नारी कवियों की नायिका मात्र न रह जाएगी। वह श्रम करने वाली, समान अधिकार वाली नागरिक भी होगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ रामविलास शर्मा के निबन्ध 'तुलसी साहित्य में सामंत विरोधी मूल्य' से ली गयी हैं।

प्रसंग एवं व्याख्या :- तुलसी की नारी दृष्टि पर लगे आरोपों को खारिज करते हुए, शर्मा जी का कहना है कि तुलसी ने नारी को सामन्ती भोगवादी मानसिकता से निकालकर उसे पत्नी का दर्जा दिया। उसमें सौन्दर्य व प्रेम दोनों है। वह केवल नायिका नहीं है। वह समान अधिकार की बात करेगी।

विशेष:-

① तुलसी को नारी वादी विरोधी कहना ठीक नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ii) नारी के महत्त्व को केवल भोगवादी दृष्टि से न देखकर उसे समान अधिकार वाली सत्ता के रूप देखना चाहिए।

(iii) शर्मा जी ने नारी को प्रगतिवादी चेतना से देखने का प्रयास किया है।

(iv) नारी में सौन्दर्य, प्रेम, भावना के साथ काम का तथा समानता के अधिकार का प्रश्न भी उठाया।

(v) भाषा आसान, सरल व स्पष्ट

(vi) आलोचनात्मक निबन्ध शैली।

(vii) नारी को आधुनिक नारीवादी दृष्टि प्रदान की।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'क्या आपको लगता है कि एक मार्क्सवादी आलोचक एवं निबंधकार होते हुए भी रामविलास शर्मा तुलसी-साहित्य का मूल्य-निर्धारण करते हुए सामान्य मार्क्सवादी अवधारणा का अतिक्रमण करते हैं।' पाठ्यक्रम में निर्धारित निबंध के आधार पर अपना मत प्रकट कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रामविलास शर्मा हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी आलोचना के शिखर पुरुष हैं। और अपने निबन्धों में भी वे अपनी वैचारिक प्रतिबद्धता और शैली को छोड़ नहीं पाते हैं। परन्तु, शर्मा जी इतने समर्थ आलोचक व निबन्धकार हैं कि वे तुलसी-साहित्य का मूल्य निर्धारण करते हुए वे मार्क्सवादी की अवधारणा का अतिक्रमण भी करते हैं और उसका विस्तार भी करते हैं।

तुलसी- साहित्य में सामंत विरोधी मूल्य निबन्ध में तुलसी के प्रति उनकी दृष्टि का पता चलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

वे तुलसीदास जी को
लोक कल्याण का कवि
घोषित करते हैं तथा
भक्तिकाल के उदय में वे
सामंती व्यवस्था के टूटन व
व्यापारिक पूंजीवादी व्यवस्था जो मार्क्स
से पहले की अवस्था है में
शोषण का चरित उद्घाटित करते
है। यह मार्क्सवाद का अतिक्रमण
है शर्मा के अनुसार 15वीं 16वीं
सदी में व्यापारिक पूंजीवाद का
प्रसार भक्ति आन्दोलन के उभार
में योगदान देता है।

इतना ही नहीं, तुलसी को
सामंतवादी व्यवस्था के विरोधी
के रूप में प्रस्तुत करने के
सन्दर्भ में शर्मा जी तुलसी
में जन आधारित प्रतीका को
भी स्वीकार लेते हैं। यह भी

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मार्क्सवाद का अतिक्रमण है
इसके अलावा किसानों
को भी पर्याप्त महत्व
देते हैं जोकि मार्क्सवाद
मजदूर पर ध्यान केन्द्रित
करता है

इसके अलावा धर्म तथा
रस को भी अप्रत्यक्ष रूप
से स्वीकार कर मार्क्सवाद
का अतिक्रमण करते हैं।

इस प्रकार रामविलास अपने
गम्भीर चिन्तन तथा समझ
से न केवल मार्क्सवाद का
अतिक्रमण करते हैं बल्कि
भारतीय परिस्थिति के अनुसार
उसमें संशोधन करते हुए तुलसी
को हिन्दी जातीय चेतना का सबसे
बड़ा मानते हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रवाह अच्छा है।
और गहराई लाएँ

मॉडल उत्तर देखें

$9\frac{1}{2}$ / 20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) आप आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंधों को वस्तुनिष्ठ मानते हैं या व्यक्तिनिष्ठ? अपना मत प्रकट कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी निबन्ध परम्परा को एक स्तर में भावनात्मकता व इतिवृत्तात्मकता से निकालकर वैचारिकता के कठोर धरातल पर खड़ा कर देते हैं। 'चिन्तामणि' निबन्ध संग्रह में जब लिखते हैं कि वैचारिकता पर कहीं-कहीं हृदय भी अपना स्थान बना लिया है। इससे ही वस्तुनिष्ठ और आत्मनिष्ठ का विवाद शुरू होता है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एक वैचारिक निबन्धकार हैं। इसकी घोषणा वे स्वयं अपने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

निबन्ध संदर्भ से वाक्यवान
में करते हैं। जिसमें बुद्धि है कहीं
कहीं हृदय ने भी अपना
स्थान बना लिया। इनसे स्पष्ट
होता है कि ये वस्तुनिष्ठ निबन्ध
ही अधिक हैं।

इसके अलावा शुक्ल जी
के निबन्ध की विषयवस्तु का
चयन भी उसे वस्तुवादी ही
सिद्ध करता है क्योंकि इनमें
मनोविकारों तथा वस्तुनिष्ठ
विषयों की प्रधानता है।

शुक्ल जी की निबन्ध
लेखन शैली में वस्तुनिष्ठता
का प्रभाव अधिक है उनकी
वैज्ञानिक लेखन शैली है जिसमें
आगमनात्मक तथा निगमनात्मक
प्रणाली का प्रयोग किया

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गया है। यह शैली वस्तुनिष्ठ निबन्ध की ही होती है भाषा तथा बिम्ब आदि भी उसे वस्तुनिष्ठ ही सिद्ध करता है।

यद्यपि जहाँ व्यंग्य करते हैं, मुहावरे का प्रयोग करते हैं, उदाहरण देते हैं वहाँ आत्मनिष्ठता दिखाई देती है।

निष्कर्ष रूप से शुक्ल जी के निबन्ध वस्तुनिष्ठ हैं उनमें कहीं-कहीं व्यक्तिनिष्ठ तत्वों का भी समावेश हो गया है।

प्रमाण दीजिये
और गहराई लाएँ

7/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) प्रेमचंद के निबंध 'साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)' के आधार पर उनकी साहित्य-संबंधी मान्यताओं को प्रस्तुत कीजिए। 15

मुंशी प्रेमचन्द का निबंध 'साहित्य का उद्देश्य' उनका निबन्ध का प्रगतिशील संघ की अध्यक्षता में दिया गया उनका भाषण है। इसमें साहित्य के उद्देश्य उपयोगिता तथा प्रभाव आदि पर चर्चा की गयी है।

सबसे पहले प्रेमचन्द का मानना है कि रचनाकार में दर्द होना चाहिए। उसे परिस्थितियों की समझ होनी चाहिए। साहित्य समाज से कट कर नहीं रचा जा सकता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्द के ~~अनुसार~~ अनुसार वे रचनाकार में जन्मजात प्रतिभा को स्वीकार करते हैं। लेकिन इसके साथ ही इसे निरन्तर अभ्यास तथा चिन्तनशील होते रहने का भी सुझाव देते हैं।

प्रेमचन्द का स्पष्ट मानना है कि 'साहित्य समाज का दर्पण होता है। वे कहते हैं कि साहित्य, राजनीति और धर्म के पीछे चलने वाली वस्तु नहीं है ~~बल्कि~~ इनके आगे चलने वाली मशाल है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्द प्रभाव के साथ मानते हैं कि रचना का प्रभाव समग्रता में होना चाहिए। यह समन्वयवादी दृष्टिकोण की वकालत भी करते हैं।

भाषा के सम्बन्ध में उनका स्पष्ट विचार है कि भाषा समन्वयकारी होनी चाहिए। हिन्दू-उर्दू विवाद नहीं, हिन्दुस्तानी का प्रयोग किया जाए।

इस प्रकार प्रेमचन्द ने साहित्य को मनोरंजन न मानकर उसकी सामाजिक उपयोगिता का परिष्कार किया।

अच्छा

8/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) "पांडित्य और लालित्य का विलक्षण संयोग आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की निबंध-कला की अन्यतम विशेषता है।" इस कथन के संदर्भ में 'कुहज' निबंध का विवेचन कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ललित निबन्ध परम्परा के अग्रदूत हैं। उन्होंने भारतेन्दु युग से चली आ रही परम्परा को अपने पांडित्य और लालित्य से एक झटके में पोट बना दिया। उनके सभी निबन्धों में 'कुटज' उनका प्रतिनिधि निबन्ध है जिसमें उनका पांडित्य व लालित्य स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

'कुटज' शब्द की उत्पत्ति की व्याख्या में संस्कृत परम्परा, भाषा-विज्ञान, औषधीय परम्परा और आख्यान परम्परा सबको

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

प्रयोग करते हैं, यह उनके पांडित्य का स्पष्ट प्रमाण है। उनको भाषा, तंत्र-मंत्र, पुराण का कितना ज्ञान है।

इतना ही 'कुतप' को शिवालिक की वनस्पति बताते हैं ऐसा लगता है कि उनका भौगोलिक और ऐतिहासिक ज्ञान इतना व्यापक, गम्भीर और उच्च कोटि का है।

इनमें उनका पांडित्य झलकता है।

ऐसा लगता है कि उनका पांडित्य 'कुतप' विषय के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

प्रथम भाग में सबसे ज्यादा
स्पष्टता से निबंध है, यहाँ
पूरी तरह से वैचारिकता,
चिन्तन, व वैज्ञानिक विश्लेषण
है। यह उनके पांडित्य का प्रकाश
है। इसके बाद निबन्ध के द्वितीय
भाग में विनयों के गुण
का महत्त्व बताते हैं, उसकी
विशेषता तथा उसकी
उपयोगिता का वर्णन करते
हैं। वे भावनात्मक, आत्मपरक
व व्यक्तिनिष्ठ होकर लालित्य
प्रतिभा का उदाहरण प्रस्तुत
करते हैं।
द्विवेदी सफल! ललित
निबन्धकार हैं उनमें कल्पना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

तथा भाषण शैली या स्तवन शैली का प्रयोग खूब हुआ है वे 'कुटज' वृक्ष को ही सम्बोधित करते हैं उनसे बात करते हैं।

वे 'कुटज' को आर्थिक जीजिविषा का प्रतीक बताते हैं जो कठोर चट्टान पर रहकर भी शुष्क नहीं है। इसी प्रकार द्विवेदी जी के निबन्ध भी पांडित्य पूर्ण होते भी लालित्य की आर्द्रता से पाठक को सिंचित करते रहते हैं।

'कुटज' की उपयोगिता यह है कि वह लोगों को जीने की सीख देता है

बहुत अच्छा

11½/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी निबंध परम्परा के शिखर पुरुष हैं। उनके निबन्ध विचारों की आँच में तपकर निकलते हैं जिसमें मनुष्य के मनोविकारों की पकड़ने का प्रयास किया जाता है। 'श्रद्धा-भक्ति' इसी कोटि का निबन्ध है जिसमें मनुष्य के दो आदिम मनोविकारों श्रद्धा और भक्ति का विश्लेषण किया गया है।

श्रद्धा को परिभाषित करते हुए शुक्ल जी इसे किसी के किसी विशेष गुण के प्रति मन उत्पन्न होने वाले भाव

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

Please do not write anything except the question number in this space)

से करते हैं। इनमें लिए सामान्य से विशेष गुण का होना अनिवार्य है।

इसके बाद शुक्ल जी प्रेम और श्रद्धा में अन्तर स्पष्ट करते हुए श्रद्धा के सामाजिक पक्षों को उजागर करते हैं। प्रेम आत्मनिष्ठता तथा एकाकीपन के भाव को उद्घाटित करते हैं।

प्रेम और श्रद्धा के महत्व को बताने के बाद भक्ति के स्वरूप को स्पष्ट करते हैं, वे कहते हैं—

"श्रद्धा और प्रेम का योग ही भक्ति है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार भक्ति के महत्त्व को प्रतिपादित करते हैं। इसमें भी निर्गुण भक्ति को भक्ति का रूप बताते हैं। भक्ति और श्रद्धा की उपयोगिता का प्रभाव का अन्तर भी स्पष्ट करते हैं।

शुक्ल जी भक्ति के नौ प्रकारों का भी वर्णन करते हैं।

इसके अलावा वे श्रद्धा को लोगों को प्रीति करने वाला मानते हैं। परन्तु अपनी व्यंग्य शैली में श्रद्धा को भी विक्रय की वस्तु बताकर उसके दुरुपयोग के प्रति सचेत भी करते हैं।

इस प्रकार शुक्ल जी का श्रद्धा-भक्ति निबन्ध मनोविकारों को स्पष्ट रूप से वैज्ञानिक शैली में व्यक्त करता है।

कृपया इस स्थान में ... कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) 'शुक्लजी गंभीर प्रकृति के मननशील व्यक्ति थे किन्तु निबंधों में स्थान-स्थान पर हास्य, व्यंग्य तथा विनोद की चुटकियाँ लेकर विषय को रंजक बनाया है।' विवेचन कीजिए। 15

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को हिन्दी निबन्धरचना में गंभीर, चिन्तनशील व वैचारिक निबन्धकार के रूप में जाना जाता है। किन्तु उनके निबन्धों में लालित्य के कुछ तत्व भी आ जाते हैं। "कविता क्या है" और "श्रद्धा-भक्ति" जैसे निबन्धों में इसे देखा जा सकता है।

शुक्ल जी के निबन्ध में जब जब व्यंग्य आता है वह लालित्य दिखाई पड़ता है जैसे- जब वे श्रद्धा के दुरुपयोग पर चर्चा करते हैं तो कहते है- कि- 'जमातें खड़ी हो जाती है'।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जब वे कहते हैं कि
बन्दर को बन्दरियों के
मुख में सौन्दर्य दिखाई
देता है तो वे हास्य
का प्रयोग कर रहे होते
है इसलिए यहाँ भी
रोचक आ ही जाता है
जब शुक्ल जी
विनोद या उदाहरण का
प्रयोग करते हैं तो लालित्य
आ जाता है यही
शैली में उदाहरण देते हैं
इसलिए शुक्ल जी की
बुद्धि के बीच में जहाँ अवसर
मिला है वहाँ हृदय आकर
हास्य, विनोद व व्यंग्य के
माध्यम से रोचक व चुटीला
बना देता है

अच्छा

8/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation